International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

भारतीय लोकतंत्र में दलीय प्रणाली के विविध स्वरूप : 1952 से 2014 तक का राजनीतिक परिदृश्य

डॉ. लक्ष्मी नारायण

सारांश

भारतीय संविधान निर्माताओं ने स्वतंत्रता उपरान्त संसदीय लोकतांत्रिक व्यवस्था को अपनाया। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की तरह ही संसदीय व्यवस्था में भी राजनीतिक दल अपरिहार्य है। बिना राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों के चुनाव जैसा पर्व सम्पन्न नहीं किया जा सकता। पर आज़ादी के पिछले 70 साल में भारतीय दलीय प्रणाली का एक निश्चित स्वरूप दृष्टिगोचर नहीं होता। जागरूक भारतीय मतदाताओं ने अपने परिवर्तित मतदान व्यवहार द्वारा संघीय व राज्यों के स्तर पर दलीय प्रणाली को विविध रूप प्रदान किये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र भारतीय प्रजातंत्र में दलीय प्रणाली के इन विविध स्वरूपों से ही संबंधित है। शोध पत्र में विभिन्न कालक्रमानुसार विभिन्न राजनीतिक दलों की संसद में दलीय स्थिति व महत्वपूर्ण घटनाओं का मूल्यांकन किया गया है।

मूल शब्द: राजनीतिक दल, दलीय प्रणाली, लोकतंत्र, निर्वाचन।

प्रस्तावना:

दलीय प्रणाली, तुलनात्मक राजनीति विज्ञान की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है। इस अवधारणा के विकास में लॉर्ड जेम्स ब्राइस, स्टोर्री, दुवर्जर, एलन बॉल आदि यूरोपीय विचारकों का महत्वपूर्ण योगदान है। दलीय प्रणाली से यह संकेत मिलता है कि किसी देश में राजनीतिक दल किस तरह अस्तित्व में आते हैं, वे मतदाताओं के रूप में सामाजिक वर्गों को किस तरह संगठित व गतिमान करते हैं? इसी आधार पर विभिन्न दलीय प्रणालियाँ विकसित होती है। ये दलीय प्रणालियाँ एक–दलीय, द्वि–दलीय या बहुदलीय हो सकती है। किसी भी लोकतांत्रिक देश की निर्वाचन पद्धति भी दलीय प्रणाली के स्वरूप का निर्धारण करती है। जहां 'फर्स्ट पास्ट टू द पोस्ट' निर्वाचन पद्धति आमतौर पर द्वि–दलीय प्रणाली को बढ़ावा देती है जैसा कि ब्रिटेन व संयुक्त राज्य अमेरीका में है। वहीं आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली बहुदलीय व्यवस्था को जन्म देती है। जैसा कि पंचम गणतंत्र (1958) से पूर्व फ्रांस व वर्तमान में इटली में है। पर भारतीय दलीय प्रणाली को इन निश्चित खांचों में स्थिर नहीं किया जा सकता।

भारत में लोकतंत्र की आरम्भिक अवस्था में एक दलीय प्रभुत्व की स्थिति थी। लेकिन धीरे–धीरे विभिन्न निर्वाचनों व संगत–असंगत राजनीतिक ध्रुवीकरण ने अनेक

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

राजनीतिक दलों को जन्म दिया। राजनीतिक अस्थिरता व क्षेत्रियता के आधार पर नये–नये राजनीतिक दलों का उद्भव होने लगा तथा संघीय शासन में उनकी भागीदारी बढ़ने लगी। दलों की विविधता का ही परिणाम है कि भारत में केन्द्र व राज्य दोनों स्तरों पर गठबंधन सरकारें बनने लगी। इस प्रकार भारतीय दलीय व्यवस्था विविधिता पर आधारित है। राष्ट्रीय दलों के साथ–साथ क्षेत्रीय दलों का तेजी से विकास व अवसान परिलक्षित होता रहा है।

अध्ययन के उद्देश्य:

1. भारतीय दलीय व्यवस्था में विभिन्न राजनीतिक दलों के महत्व का आंकलन करना।
2. भारतीय दलीय व्यवस्था के रूप परिवर्तन के कारणों का पता लगाना।
3. बदलती सामाजिक व राजनीतिक परिस्थितियों में राजनीतिक दलों की भूमिका का आंकलन करना।
4. राजनीतिक दल में समूह व व्यक्ति विशेष की भूमिका का मूल्यांकन करना।

उपकल्पनाएँ:

1. भारत में दलीय व्यवस्था का एक निश्चित स्वरूप नहीं है।
2. भारतीय दलीय व्यवस्थ्था में राष्ट्रीय दलों के साथ–साथ क्षेत्रीय दलों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हुई है।
3. वर्तमान समय में दलों के मध्य विचारधारात्मक विभाजन न्यून हुआ है।
4. 1990 के बाद विचारधारात्मक राजनीति की बजाय प्रतिनिधियात्मक राजनीतिक का आगमन हुआ है।

शोध प्रविधि:

भारतीय दलीय प्रणाली में विभिन्न राजनीतिक दलों के उद्भव, अवसान व भूमिका का पता लगाने के लिए विभिन्न राजनीतिक दलों के नेताओं व कार्यकर्ताओं से प्रत्यक्ष साक्षात्कार किया गया। द्वितीयक तथ्यों का संकलन विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों व अन्य मान्य साहित्य के माध्यम से किया गया है। प्राथमिक व द्वितीयक स्त्रोतों से प्राप्त तथ्यों व जानकारी के आधार पर ही मूल्यांकन कार्य किया गया है।

प्रथम दौर–कांग्रेस का प्रभुत्व

1952,1957 व 1962 में तीन आम चुनाव व राज्यों के चुनाव हुए। 1952 के प्रथम आम चुनाव में लोकसभा के कुल 489 स्थानों पर चुनाव हुए। कांग्रेस ने 74.4: सीटे यानि 364 सीटे जीती, 1957 में 494 में से 371 व 75: तथा 1962 में 361 यानि 72.9:। इस प्रकार प्रथम तीन आम चुनावों में कांग्रेस ने लगभग 3/4 सीटों पर जीत दर्ज की। द्वितीय

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

स्थान पर क्रमशः 16, 27 व 29 सीटे प्राप्त कर भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी थी। इन तीनों चुनावों में जवाहर लाल नेहरू का चमत्कारिक व्यक्तित्व व स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस की भूमिका ने केन्द्र व राज्यों में श एक दलीय प्रभुत्वश की स्थिति ला दी। नॉर्मन डी पॉमर ने कांग्रेस को एक 'छाता संगठन' कहा है जबकि अम्बेडकर ने कांग्रेस की तुलना – एक 'धर्मशाला' से की है जिसमें मुर्ख, धुर्त, दोस्त, शत्रु, पूंजीपति, मजदूर, वाम–दक्षिण, धर्मनिरपेक्ष व साम्प्रदायिक सब ठहर सकते हैं। इसे ही रजनी कोठारी – 'कांग्रेस प्रणाली' कहते हैं। यानि शुरूआत में कांग्रेस एक 'इन्द्रधनुषीय पार्टी' थी। यह 'मध्यम मार्ग' पर चलने वाली 'अरस्तु' पार्टी थी।

1952 से 67 तक कांग्रेस को सिर्फ दो राज्यों में चुनौती मिली –श्र ेदक ज्ञ में नेशनल कांफ्रेस ने उसे थोड़े समय सत्ता से बाहर रखा वहीं केरल में 1957 से 1959 दो साल तक गैर–कांग्रेसी सरकार रही। प्रथम गैर–कांग्रेसी सरकार – केरल में ब्च्प् की अगुवाई में – 'केरल डेमोक्रेटिक लेफ्ट फंर्ट' की बनी। ब्च्प् को 125 में से 60 सींटे मिली 5 निदर्लियों के सहयोग से– म्डै नम्बूदरीपाद मुख्यमंत्री बनें। दूनियां में यह पहला अवसर था जब कम्यूनिष्ट पार्टी की सरकार कहीं लोकतांत्रिक तरीके से बनी। अनु. 356 का प्रथम राजनीतिक दुरूपयोग भी इस सरकार की 2 साल बाद की बर्खास्तगी से जुड़ा है। हालांकि 356 का इससे पहले पंजाब में प्रयोग हो चुका था।

सोशलिस्ट पार्टी – ;समाजवादी पार्टीद्ध

1934 – कांग्रेस के अन्दर ही 'कांग्रेस सॉशलिस्ट पार्टी' का गठन कुछ युवा नेताओं ने किया। संस्थापक अध्यक्ष आचार्य नरेन्द्र देव, अन्य नेता . जे.पी. नारायण, राम मनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, अशोक मेहता, मीनु मसानी। ये सब लोकतांत्रिक समाजवादी थे। 1948 में कांग्रेस के संविधान परिवर्तन व दोहरी सदस्यता पर प्रतिबंध के कारण – अलग – 'सोशलिस्ट पार्टी' बना ली कांग्रेस से। 1952 में सोशलिस्ट पार्टी से अलग हो 'प्रजा सॉशलिस्ट पार्टी' बना ली – आचार्य नरेन्द्र देव व जे.पी. ने। प्रजा सॉशालिस्ट पार्टी ने कभी भी कांग्रेस का जबरदस्त विरोध नहीं किया बल्कि आंशिक विरोध ही किया। कांग्रेस का विरोध न करने को प्रजा सॉशलिस्ट पार्टी के नेता – अशोक मेहता ने – 'पिछड़ी अर्थव्यवस्था की राजनीतिक विवशताओं का सिद्धांत' कहा। राम मनोहर लोहिया ने बाद में 'संयुक्त सोशलिस्ट पार्टी' बनायी। जार्ज फर्नाडिस भी साथ थे। 1962 में चीन से हार के बाद नेहरू का विरोध शुरू हो गया था तथा श्रण्ठण् कृपलानी ने प्रथम बार नेहरू मंत्रीपरिषद के खिलाफ लोक सभा में अविश्वास प्रस्ताव रखा जो पारित नहीं हुआ। 1964 में नेहरू की

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

मौत के बाद 'सिंडिकेट' नेताओं के समर्थन से लाल बहादुर शास्त्री, मोरारजी देसाई को पछाड़ प्रधानमंत्री बने। 1966 में ताशकंद में शास्त्री जी की मौत के बाद 'सिंडिकेट' नेताओं के सहयोग से मोरारजी को पछाड़ इन्दिरा गांधी प्रधान मंत्री बनी। लोहिया – इन्दिरा गांधी को 'गुंगी गुड़िया' कहते थे। इन्दिरा गांधी 1958 में कांग्रेस अध्यक्ष व शास्त्री मत्रीपरिषद् में संचार मंत्री थी।

सिडिंकेट – कांग्रेस संगठन में मौजूद एक अनौपचारिक समूह। जिसका नेहरु की मौत के बाद पार्टी में दबदबा था। ये नेता थे– के.कामराज ;ज.ब्डए तमिलनाडुद्धए एस. निजलिंगपा ;ज.ब्ड कर्नाटकद्ध, नीलम संजीव रेड्डी ;आन्ध्राद्ध, अतुल्य घोष ;प. बंगालद्ध, ैण्ज्ञ पाटिल ;महाराष्ट्रद्ध। इस 'गैर–हिन्दी भाषी' शक्तिशाली गुट को श्ध्सक हनंतकेश कहा जाता था। इन्होने ही दो बार मोरारजी को प्रधानमंत्री नहीं बनने दिया।

युवा–तुर्क – ;ल्वदह जनतोद्ध

1969 में इन्दिरा के समय वे युवा नेता जो त्वरित गति से समाजवादी परिवर्तन लाने के हिमायती थे। चन्द्रशेखर, कृष्णकांत, व रामधन आदि जिनकी वजह से ही इन्दिरा ने बैकों के राष्ट्रीयकरण, प्रिवीपर्स की समाप्ति, भूमि सुधार जैसे कदम उठायें।

कांग्रेस प्रणाली को चुनौती (1967 का चुनाव)

1967 का चुनाव वह प्रथम चुनाव था जो बगैर नेहरू लड़ा जा रहा था। इन्दिरा को अभी प्रधानमंत्री बने साल भर ही हुआ था तथा उनका स्वतंत्र व्यक्तिव नहीं बन पाया था। 1967 के लोकसभा चुनाव में सभी टिकटें 'सिडिकेट नेताओ' ने बांटी। इन्दिरा को एक भी सीट बांटने का अवसर नहीं दिया। अनुभवहीन इन्दिरा व मोरारजी की आपसी उठापटक के मध्य राम मनोहर लोहिया ने 'गैर–कांग्रेसवाद' का नारा दे विरोधी दलों को एक कर दिया। जब चुनाव का परिणाम आया तो पर्यवेक्षकों ने इसे 'राजनीतिक भूकम्प' की संज्ञा दी। इन्दिरा के आधे बुढ़े मंत्री के. कामराज, अतुल्य घोष, एस.के. पाटिल आदि चुनाव हार गये।

1967 के चुनावों में कांग्रेस को 520 में से 283 सीटे मिली जो कि कुल सीटट का 54.42: थी। स्वतंत्र पार्टी को 42 सीटे मिली तथा वह द्वितीय स्थान पर थी। कांग्रेस को केन्द्र में तो बहुमत मिल गया पर 9 राज्यों में कांग्रेस विरोधी सरकारें बनी। राज्य विधानसभा चुनावों में कांग्रेस का हाल बुरा हो गया। 9 राज्यों में कांग्रेस विरोधी सरकारें बनी। बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेशए पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेशए केरल = 8 ये सरकारें गठबन्धन सरकारें थी, वहीं तमिलनाडु में डी.एम.के. की प्रथम गैर–कांग्रेसी पूर्ण बहुमत की सरकार बनी। तथा सी. नट्राजन अन्नादुरई मुख्यमंत्री बने।

इन राज्य सरकारों को 'संयुक्त विधायक दल की गठबंधन सरकारें कहा जाता है यानि राज्यों में गठबन्धन सरकारों का पहला दौर था यह। कुछ विद्वान इसे 'एक दलीय प्रभुत्व' को पछाड़ आयी 'प्रतिस्पर्धी दलीय प्रणाली' भी कहते हैं। 1967 के बाद आया राम, गयाराम की वजह से भारतीय राजनीतिक परिदृश्य पर 'भारी दल बदल' की घटनाएं देखने को मिली। जैसा कि रिकर ने कहा है – 'राज्यों में बने ये गठबन्धन शक्ति–अधिकरण पर आधारित थे ना कि विचारधारा पर'।

1969 में वी.वी गिरी के राष्ट्रपति वाले मुद्दे पर कांग्रेस में 1907 के बाद द्वितीय बार विभाजन हुआ। 1967 तक कांग्रेस का चुनाव चिह्न 'दो बेलों की जोड़ी' था। 1978 में जब इन्दिरा ने कांग्रेस ;प्द्ध ए प्दकपतं बनायी तक से चुनाव चिन्ह – हाथ था। कांग्रेस ;व्द्ध यानि कांग्रेस ;संगठनद्ध के अलग होने पर इन्दिरा गांधी की सरकार अल्पमत में आ गयी 1969 में जो आगामी दो साल तक ब्ब् व डी.एम.के. के समर्थन से चली।

कुछ विचारक–1967–1989 को – ष्जीम ठप.च्वसंतप्रंजपवद व िजंजम चंतजल `लेजमउष भी कहते हैं। यानि राज्यों में कांग्रेस व कांग्रेस विरोधी दल अर्थात् दो ध्रुवीय प्रणाली राज्यों में।

कांग्रेस की पुनर्स्थापना (1971–1977)

1967 के चुनाव जो इन्दिरा गांधी के प्रधानमंत्री में लड़ा गया। इस चुनाव में 'कांग्रेस प्रणाली' को चुनौतियां मिली थी। युवा तुर्कों के प्रभाव में आ इन्दिरा श्ब्मदजमत व िस्मजिश यानि मध्यममार्ग से वामपंथ/समाजवाद की ओर झुक गयी। इन्दिरा ने 1969 में 14 बैंको का राष्ट्रीयकरण, बाद में राजाओं के प्रिवीपर्स ;26वां संशोधनद्ध व भूमि सुधार जैसे कदम उठा भारतीय राजनीति में अपना एक स्वतंत्र वजूद स्थापित कर लिया। 1969 में राष्ट्रपति जाकिर हुसैन के असामयिक निधन पर कांग्रेस के घोषित प्रत्याशी नीलम संजीव रेड्डी के खिलाफ तात्कालिक उपराष्ट्रपति व कार्यवाह राष्ट्रपति वी.वी गिरी जो कि आन्ध्र प्रदेश के मजदूर नेता थे, को निदर्लीय खड़ा करवा दिया। सिडिकेट नेताओं के खिलाफ पर्दे के पीछे राजनीति कर इन्दिरा ने 'अन्तरात्मा से वोट' देने की सलाह दी। इन्दिरा के सहयोग से वी. वी गिरी 'द्वितीय गणना' के द्वारा चुनाव जीत गये। इस जीत ने तथा समाजवादी नीतियों ने इन्दिरा की संगठन व सरकार में मजबूत नेता की छवि पुष्ट कर दी। इन्दिरा ने इस लहर का फायदा उठाने के लिए 1972 में होने वाले आम चुनावों को एक वर्ष पूर्व 1971 की फरवरी में करवा लिया।

इन चुनावों में लोहिया ने 'इन्दिरा हटाओं' का नारा दिया। वोटों को बिखरने से बचाने हेतु सभी गैर–कांग्रेसी व 'गैर–साम्यवादी' पार्टियों ने मिलकर श्ळतंदक ।ससपंदबमश

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

;महाजोटद्ध बनाया। इस ग्रेंड अलांयस में ष्ैण्च ;संयुक्त सॉशालिस्ट पार्टी–लोहियाद्ध च्ैण्च ;प्रजा सोशलिस्ट पार्टी–आचार्य नरेन्द्र देव, अशोक मेहताद्ध + जनसंघ+स्वतंत्र पार्टी–सी–राजगोपालचारी+भारतीय क्रांतिदल– चौधरी चरण सिंह थे।

ग्रेड–अलांयस ने 'इन्दिरा हटाओं' तो इन्दिरा गांधी ने ब्च्प् से गठजोड कर 'गरीबी हटाओं' का प्रसिद्ध नारा दे, चुनाव में जबरदस्त जीत हासिल की। 1971 के चुनावों में कुल 518 सीटों के लिए चुनाव हुए। कांग्रेस ने 352 सीटे (67.95ःद्ध जीती। भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) 25 सीटें जीत दूसरे स्थान पर थी। इस प्रकार प्रथम 5 आम चुनावों में किसी भी विरोधी दल को लोकसभा में 10ः सीटे नहीं मिली अर्थात् एक सशक्त विपक्ष नहीं उभर सका। ळतंदक ंससपमदबम को 40 व ब्वदहतमे ;व्द्ध को सिर्फ 16 सीटे मिली। यानि विरोधियों का सुपड़ा साफ हो गया। कांग्रेस ;व्द्ध वाले अधिकांश सीडिकेट नेता चुनाव में धराशाही हो गये।

इसके बाद इन्दिरा ने ैण्।बिपदंच।झ की धूरी बनती देख छवअ.क्मबण 1971 में न्ैै से 20 वर्षीय शांति व सहयोग की संधि की तथा बांग्लादेश युद्ध किया। बांग्लादेश जीत की पृष्ठभूमि में राज्य विधानसभाओं के चुनाव हुए जिसमें अधिकांश राज्यों में कांग्रेस की सरकारें बनी। अब इन्दिरा कांग्रेस की एक छत्र नेता थी। ऐसे में कांग्रेस अध्यक्ष देवकांत बरूआ ने कहा –श्प्दकपं पे प्दकपतं ंदक प्दकपतं पे प्दकपंश ;1974द्ध बांग्लादेश विजय के बाद अटल बिहारी वाजपेयी ने लोकसभा में इन्दिरा को 'दुर्गा' कहा।

अब इन्दिरा देश की निर्विवाद नेता थी पर जल्द ही संकटों की शुरूआत हो गयी। बांग्लादेश युद्ध में खर्चा, ै। द्वारा सहायता बन्द करना, 80 लाख बांग्लादेशियों का आना तथा अरब–इजरायल युद्ध यानि 1973 के अरब संकट व अकाल के कारण मंहगाई व बेरोजगारी बढ़ गयी। ऐसे में 1974 में गुजरात में मंहगाई व बेराजगारी से त्रस्त युवाओं ने 'गुजरात नव–निर्माण आन्दोलन' छेड़ दिया। मोरारजी जिन्होंने 1969 में उप–प्रधानमंत्री व वित्त मंत्री का पद त्यागा था, भी इस आन्दोलन में कूद पड़े। आन्दोलन की यह आग पटना विश्व विद्यालय, बिहार में भी फैल गयी। नेहरू के स्वाभाविक उत्तराधिकारी माने जाने वाले जे.पी. नारायण जो कि 1955 में ही सक्रिय राजनीति से सन्यास ले चुके थे तथा डाकु–उन्मूलन में जिनकी मुख्य भूमिका थी, छात्रों के निवेदन पर आन्दोलन की बागडोर संभालने को राजी हो गये। जे.पी. ने 'सम्पूर्ण क्रांति' ;ज्वजंस त्मअवसनजपवदद्ध का नारा देशव्यापी बना दिया। 'सच्चा लोकतंत्र स्थापित करेगे' 'सिहांसन छोड़ों की जनता आती है', 'सम्पूर्ण क्रांति अब नारा है, भावी इतिहास हमार है' के नारे पूरे देश में गूंजने लगें।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

ऐसे में जार्ज फनार्डीस ने रेलवे हड़ताल करवा दी 20 दिन की। आग में घी का काम किया, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायधीश 'जगमोहन लाल सिन्हा' के फैसलें ने। यह फैसला उन्होंने रायबरेली लोक सभा सीट से इन्दिरा गांधी से हारे उम्मीद्वार राजनारायण की रिट पर दिया था जिसमें उन्होंने इन्दिरा पर चुनावों में सरकारी मशीनरी के दुरूपयोग का आरोप लगाया था। जगमोहन लाल सिन्हा ने इन्दिरा का लोकसभा निर्वाचन रद्द कर दिया।

इन्दिरा को 24 जून 1975 को स्वॉच्च न्यायालय से फौरी राहत मिल गयी कि इन्दिरा डण्च्य तो बनी रहेगी पर लोकसभा की कार्यवाही में भाग नहीं ले सकती। 25 जून 1975 को जे.पी. ने दिल्ली के रामलीला मैदान में विशाल रैली कर इन्दिरा पर इस्तीफे का दबाव बनाया। पर इन्दिरा जिसे श्रण्च्य अपनी बेटी मान इन्दु कहते थे, ने रात मध्यरात्रि को आन्तरिक अशान्ति का नाम ले आपातकाल ;अनु. 352द्ध लगवा दिया।

तात्कालिक राष्ट्रपति फखरूद्दीन अली से इन्दिरा गांधी ने सोते में जगा श्म्उमतहमदबल की घोषणा पर हस्ताक्षर करवाये। ब्ंइपदमज को तो सुबह जानकारी दी गयी। रात्रि को ही अखबारों की बिजली लाइने काट दी गयी, प्रेस सेन्सरशिप लागू कर दी गयी, अधिकांश विरोधी नेताओं को गिरफ्तार कर 'मीसा' ;डप्ै।द्ध के तहत जैल में ठूंस दिया गया। मौलिक अधिकार निलम्बित कर दिये गये। डप्ै। ;डंपदजमदंदबम व िप्दजमतदंस ैमबनतपजल ।बजण 1971द्ध – निवारक नजरबन्दी। ब्च्प् ने आपातकाल का समर्थन किया। यही नहीं वयोवृद्ध गांधी वादी सर्वोदयी नेता बिनोवा भावे ने भी आपातकाल का समर्थन कर इसे – 'अनुशासन पर्व' कहा। आडवाणी ने कहा 'जिन्हे सिर्फ झुकने के लिए कहा वे रेंगनें लगे'। 1976 में इन्दिरा ने 42वां संविधान संशोधन जिसे कि 'मिनी संविधान' कहा जाता है, के द्वारा लोकसभा का कार्यकाल 1 वर्ष बढ़ा 6 वर्ष कर दिया। 1 साल की म्उमतहमदबल व 1 साल लोकसभा का बढा कार्यकाल के हिसाब से चुनाव 1978 में होने थे पर 19 महीनें बाद अचानक आपातकाल जो कि भारतीय लोकतंत्र पर एक काला धब्बा है, को फरवरी – 1977 में हटा लिया गया तथा आम चुनावों की घोषणा कर दी गयी।

द्वि–दलीय प्रणाली की ओर अग्रसरता (1977–1980)

1977 में छठे आम चुनाव हुए। श्रण्च्य के नेतृत्व में जनता पार्टी का गठन हुआ। यह पार्टी कांग्रेस ;व्द्ध+जनसंघ+भारतीय लोकदल ;स्वतंत्र पार्टी+भारतीय क्रांति दल के मिलने से 1974 में बना थाद्ध+सोशालिस्ट पार्टीयों के मिलन से बनी थी बाद में जगजीवन राम की पार्टी लोकतांत्रिक कांग्रेस भी इसमें शामिल हो गयी। कांग्रेस ने ब्च्प् व क्डज्ञ का साथ

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

लिया। जनता पार्टी ने 'लोकतंत्र बचाओं' के नारे के साथ चुनाव लड़ा। उत्तर भारत में पार्टी को बड़ी जीत मिली। राजस्थान ;नाथू राम मिर्धा–नागौरद्ध व मध्य प्रदेश से कांग्रेस केवल एक–एक सीट ही जीत पायी। कुछ राज्यों से कांग्रेस का पूर्ण सफाया हो गया। जनता पार्टी को 542 में से 295 (54ण्43ः) सीटों के साथ स्पष्ट बहुमत मिला कांग्रेस को 154 सीटे (28ण्41ः) मिली। पर प्रधानमंत्री पद के लिए मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह व जगजीवन राम में खींचतान आरम्भ हो गयी।

मोराराजी देसाइ प्रधानमंत्री ;प्रथम गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्रीद्ध बने जबकि चरण सिंह व जगजीवन राम उप प्रधानमंत्री। दो साल बाद चौधरी चरण सिंह के समर्थन वापिस लेने से मोरारजी की सरकार अल्पमत में आ गयी। मोरारजी ने इस्तीफा दे दिया। मोरारजी के इस्तीफे के बाद चौधरी चरण सिंह, कांग्रेस के सहयोग से प्रधानमंत्री बने पर तीन हफ्ते बाद ही कांग्रेस ने समर्थन वापिस लिया। इस प्रकार चौधरी चरण सिंह ऐसे प्रधानमंत्री बने जिन्होंने प्रधानमंत्री रहते कभी लोकसभा का सामना नहीं किया। जनता पार्टी ने आपात काल की ज्यादतियों पर जे.सी. शाह आयोग का गठन किया।

कांग्रेस आधिपत्य की पुनर्स्थापना (1980–1989)

आम जनता, जनतापार्टी की नोटंकी से तंग आ चुकी थी। ऐसे में कांग्रेस ने खुद को सत्ता का स्वाभाविक दावेदार बता स्थिर सरकार के वादे के साथ 1980 का चुनाव लड़ा। कांग्रेस को 527 में से 352 (66ण्79ः) सीटे मिली। जनता दल (सेक्यूलर) 41 सीटे ले दूसरे स्थान पर रही। कांग्रेस की जीत हुई, जनता पार्टी बिखर गयी, 1980 में जनसंघ वालों ने बी.जे.पी. बना ली। इन्दिरा गांधी फिर प्रधानमंत्री बनी। द्वि–दलीय व्यवस्था बनते–बनते बिगड़ गयी। 1984 की 31 अक्टूबर को सुबह सिख अंगरक्षकों ने इन्दिरा को गोली मार दी। इन्दिरा की मौत के बाद 2 महींने तक राजीव प्रधानमंत्री रहे। क्मबण् 1984 में आठवी लोक सभा के चुनाव हुए। इन्दिरा की मौत से पैदा हुई सहानुभूति लहर पर सवार हो कांग्रेस ने आज तक के सारे रिकार्ड तोड़ 415 सीटे प्राप्त की यानि 3/4 बहुमत, एक राज्य आन्ध्र प्रदेश अपवाद था वहां कांग्रेस की लहर नहीं चली। 1982 मेंएन.टी. रामाराव द्वारा गठित तेलगुदेश्म पार्टी ने ;ज्क्च्द्ध ने वहां 38 सीटे जीती तथा दिसम्बर 1984 के चुनावों में द्वितीय नम्बर की पार्टी बनी। मिस्टर क्लीन यानि राजीव गांधी प्रधानमंत्री बने पर 1985–शाहबानों प्रकरण, 1986 रामलला के ताले खोलने से हुए बी.जे.पी. के उत्थान व वी.पी. सिंह द्वारा उठाये बोफोर्स तोप के भ्रष्टाचार ने राजीव पर दाग लगा दिये।

गठबन्धन सरकारों का दौर (1989 से 2014 तक)

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

1989 में तीन बड़ी पार्टियों ने चुनाव लड़ा जनता दल – ;वी.पी. सिंह+चन्द्रशेखर+ चौधरी देवी लालद्ध, कांग्रेस व बीजेपी। राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस 197 (529 कुल सीटें) जीत सबसे बड़ा दल बना पर उसने सरकार नहीं बनायी। सरकार बनायी द्वितीय स्थान (143 सीटे) वाले दल–जनता दल ने। प्रधानमंत्री बने विश्वनाथ प्रताप सिंह तथा बाहर से समर्थन दिया बी.जे.पी. व वामपंथियो ने। इसे 'राष्ट्रीय मोर्चे' की सरकार कहा जाता है। वी.पी. सिंह ने 1990 में मण्डल कमीशन की रिपोर्ट लागू कर ओ.बी.सी. जातियों को आरक्षण दे दिया। इससे खफा हो बी.जे.पी. ने समर्थन वापिस ले लिया। वी.पी. सिंह ने इस्तीफा दे दिया लगभग 1¹६₂ साल बाद। फिर चन्द्रशेखर प्रधानमंत्री बने कांग्रेस के सहयोग से पर समर्थन वापसी कर 6–7 महीने बाद कांग्रेस ने चन्द्रशेखर की सरकार गिरा दी। चौधरी देवी लाल दोनों सरकारों के किंग मेकर तथा दोनों में उप प्रधानमंत्री रहे। 1991 में चुनाव हुए – द्वितीय चरण के मतदान में स्ज्ज्ज्म ने मानव बम धनु द्वारा तमिलनाडु चुनाव प्रचार के दौरान राजीव की हत्या करवा दी।

1991 के चुनावों में कांग्रेस को 232 (44ण्53:) सीटें मिली। भाजपा को 120 सीटें मिली। कुछ दलों का सहयोग ले नरसिम्हा राव प्रधानमंत्री तथा मनमोहन सिंह वित्त मंत्री बने व उदारीकरण की नीतियां लागू की। 1996 में अगले चुनाव हुए, बीजेपी 161 (29ण्65:) सीटे ले सबसे बड़ा दल बना तथा अटल बिहारी प्रथम बार 13 दिन के लिए प्रधानमंत्री बनें। कांग्रेस को 140 सीटे मिली तथा जनता दल को 46 सीटे मिली। फिर कांग्रेस के सहयोग से 'संयुक्त मोर्चे' की सरकार बनी। साल भर देवगोड़ा व साल भर इन्द्रकुमार गुजराल प्रधानमंत्री रहे। अस्थिरता का दौर जो 1989 में शुरू हुआ था, अब तेज हो गया। 1996 के दो साल बाद 1998 में फिर चुनाव हुए। इस बार भी बी.जे.पी. सबसे बड़ा दल थी। अटल बिहारी वाजपेयी 13 महीने के लिए दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। 1998 की लाहौर बस यात्रा, परमाणु विस्फोट व करगिल युद्ध इसी समय हुए। 1999 में फिर चुनाव हुए इस बार बी.जे.पी. ने 13 दलों के चुनाव पूर्व बने गठबन्धन राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन ;छक।द्ध द्वारा चुनाव लड़ा। अटल बिहारी तीसरी बार 5 साल के लिए प्रधानमंत्री बने। फिर 2004 व 2009 में चुनाव हुए, न्च। की सरकार बनी तथा प्रधानमंत्री बने मनमोहन सिंह।

- छक। . छंजपवदंस क्मउवबतंजपब ।ससपंदबम – राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबन्धन/मोर्चा
- न्च। . न्दपजमक च्तवहतमेपअम ।ससपंदबम – संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन

छक। – 1999 में ठण्श्रण्च के नेतृत्व में बना। जब छक। बना उस समय कांग्रेस का पंचमढी मध्यप्रदेश में वार्षिक अधिवेशन हुआ पर कांग्रेस ने 'एकला चलों' की नीति का

अनुसरण किया पर चार साल में ही कांग्रेस को सहयोगी दलों का महत्व समझ में आ गया तथा 2003 में न्च्व्। का गठन किया गया। 2009 के बाद 2014 में चुनाव हुए। न्च्व्। सरकार के भ्रष्टाचार, अन्ना हजारे का जनलोकपाल आन्दोलन, काला धन का मुद्दा, नरेन्द्र मोदी का 'अच्छे दिन आयेगे' का वादा के साथ हुए चुनाव में 30 साल बाद ;1984 के बादद्ध किसी पार्टी को लोकसभा में स्पष्ट बहुमत मिला। 16वीं लोकसभा के इस चुनाव में ठण्श्रण्च को 282 सीटे तथा 31 प्रतिशत वोट मिले। अगर सहयोगी दलों की सीटें भी जोड़ दे तो छक्। को 336 सीटें मिली। स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस का यह सबसे खराब प्रदर्शन था। कांग्रेस को सिर्फ 44 सीटें मिली तथा न्च्। को 56। लोकसभा में विपक्ष का नेता बनने के लिए 10 प्रतिशत सीटे चाहिए जो कि 55 होती है जो किसी भी दल को नहीं मिली। 16वीं लोकसभा में बी.जे.पी. – 282 तथा द्वितीय कांग्रेस – 44, तीसरी ।प्क्डज्ञ . 37 व चौथे स्थान पर 33 सीटें के साथ तृणमूल कांग्रेस। ठण्ण्च को लोकसभा में एक भी सीट नहीं मिली।

1989 से 2014 का दौर

- इस काल में 1989,1991,1996,1998,1999,2004,2009 व 2014 में आम चुनाव हुए।
- 1989 के बाद के दौर की चुनाव प्रणाली व चुनावी परिदृश्य को विभिन्न प्रकार से प्रकट किया जा सकता है–

1. **गठबन्धन सरकारों का दौर** – क्योंकि 1989 से 2009 तक चुनावों में किसी भी पार्टी को लोक सभा में स्पष्ट बहुमत नहीं मिला अतः इसे 'अल्पमतीय सरकारो का दौर' भी कहा जाता है।
2. 1989 के बाद के दौर को 'बहुदलीय प्रणाली' 'बहुमत से अल्पमत' या 'गठबन्धनात्मक दलीय प्रणाली' भी कहा जाता है।

इस दौर की विशेषताएँ–

- 1990 में मण्डल कमीशन की रिपोर्ट लागू होने के बाद उत्तर भारत में व्ठब जातियों का उभार हुआ। अब ये जातियां तथा इनके नेता मूलायम सिह, लालू प्रसाद यादव, नीतिश कुमार, शरद यादव आदि राष्ट्रीय व राज्य राजनीति में महत्वपूर्ण हो गये। वही बसपा की वजह से दलित जातियाँ राजनीतिक मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका अदा करने लगी है।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

- 1989 के मण्डल कमीशन की वजह से व्ठ जातियों के उभार व बसपा की वजह से ैण्ठ के उभार को – क्रिसटॉफ जेफरलॉ – 'मौन क्रांति' ;पसमदज त्मअवसनजपवदद्ध की संज्ञा देते है।
- ठववा . प्दकपंश ैपसमदज त्मअवसनजपवद रू. जीम तपेम वि स्वूमत ब्ंजमे पद छवतजी प्दकपंद च्वसपजपबे दृ 2002
- पिछडी व दलित जातियों के इसी उभार पर एक महत्वपूर्ण पुस्तक ओर है– च्ंतजल ब्वउचमजपजपवद पद प्दकपंद ेजंजमे रू. म्समबजतवस चवसपजपबे पद चवेज . बवदहतमे चवसपजल . 2014 – सुहास. पलसीकर, के.सी. सुरी व योगेन्द्र यादव।
- सुहास पलसीकर के अनुसार 1989 के बाद पिछड़ी जातियों के उभार के बाद कांग्रेस काफी कमजोर हो गयी है। कांग्रेस के इस वर्चस्व के भंग होने को पलसीकर 'उत्तर – कांग्रेस प्रणाली' ;च्वेज.ब्वदहतमे च्वसपजलद्ध कहते है। 1989 के बाद की व्यवस्था जिसे श्च्वेज.ब्वदहतमे च्वसपजलश कहते हैं को दो भागों में बांटा जा सकता है।
- पहला भाग – 1989–1999 – इस काल में 'राजनीतिक अस्थायीत्व' था। गठबन्धन, चुनाव के बाद बने। 1989–91–96–98–99 यानि पांच बार चुनाव हुए व 6 प्रधानमंत्री बने व 8 मंत्रीमण्डल।
- दूसरा भाग – 1999–2009 – इस काल मे चुनाव पूर्व गठबन्धन बने, गठबंधन सरकारें तो बनी पर वे स्थायी थी। अटलबिहारी ;छव।द्ध पांच साल व मनमोहन सिंह ;न्च।द्ध 10 साल प्रधानमंत्री रहे। इस काल को 'छवतउंसप्रंजपवद वि चवेज बवदहतमे चवसपजल' कहा जाता है। योगेन्द्र यादव इसे 'बहुल–द्विध्रुवीय व्यवस्था' ;डनसजपचंस ठप.चवसंतपजलद्ध कहते हैं।
- यानि बहुत सी पार्टिया है पर छव। व न्च। दो ध्रुव बन गये है। इसे हम 'द्विदल प्रधान–बहुदलीय व्यवस्था' भी कह सकते हैं।

क्षेत्रीय दलों का महत्व बढ़ा

1989 के बाद केन्द्र में जितनी भी सरकारें बनी यानि गठबन्धनात्मक सरकारें, वे क्षेत्रीय दलों के समर्थन पर निर्भर थी। इस प्रकार राजनीति का क्षेत्रीयकरण हुआ। संघीय व्यवस्था भी मजबूत हुई क्योंकि क्षेत्रीय दलों ने राज्यों का महत्व बढ़ा दिया। क्षेत्रीय दलों के उभार के कारण राज्य मजबूत, केन्द्र थोड़ा कमजोर तथा संघीय व्यवस्था यानि संघवाद मजबूत हुआ। अल्पमत की सरकारों के कारण राज्य दलों ने केन्द्र सरकार से सौदे –

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

बाजी की अतः मोरिस जॉन्स वाली 'सौदेबाजी संघवाद' भी दृष्टित हुआ तथा राज्य स्वायतत्ता में वृद्धि हुई। क्षेत्रीय दलों ने लोकतंत्र, सहभागिता व संघीय प्रणाली को मजबूत किया। केन्द्र सरकार में भागीदारी के कारण क्षेत्रीय दलों का उदारीकरण हुआ। उन्होने विघटनकारी व अलगाववादी मांगे छोड़ केन्द्र का सहयोग किया यानि जॉन ऑस्टिन वाला 'सहकारी संघवाद' भी इस काल में परिलक्षित हुआ।

कमण्डल राजनीति का बढ़ता वर्चस्व

1989 के बाद राममन्दिर मुद्दे की वजह से हिन्दुत्व राजनीति यानि बहुसंख्यक राजनीति का दौर शुरू हुआ। हिन्दुत्व की पतवार पर सवार हो बी.जे.पी. 1996ए1998 व 1999 के आम–चुनावों में सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी। कई राज्यों में भी इसने सरकारें गठित की तथा राष्ट्रीय दल बन गयी। हालांकि गठबन्धन की मजबूरियों की वजह से बीजेपी को राममन्दिर, अनु. 370 व समान नागरिक संहिता का मुद्दा छोड़ना पड़ा तथा डपदपउनउ ब्वउउवद ।हमदकं अपनाया। रजनी कोठारी ने सही–कहा है – 'भारतीय लोकतंत्र ने भाजपा को 'उदारीकृत' व साम्यवादी दलों का 'उदारीकरण' कर दिया है।'

कुछ अन्य प्रवृतियाँ

1. 'विचारधारा की राजनीति' की बजाय 'प्रतिनिधित्व की राजनीति'
2. अब विचारधारा नहीं, सत्ता महत्वपूर्ण हो गयी। सिद्धांतों को तिलांजली दे दी गयी। येन केन प्रकारेण सत्ता सुख अग्रगामी हो गया।
   - अगर हम 1989 के बाद का प्रवृत्ति देखें तो सभी पार्टियां 2014 तक निम्नलिखित मुद्दों पर एकमत नजर आती है–
     1. नयी आर्थिक नीति पर सहमति यानि भूमण्डलीकरण– उदारीकरण – निजीकरण पर सहमति।
     2. पिछड़ी जातियों के राजनीतिक व सामाजिक दावे पर सहमति।
     3. प्रांतीय/क्षेत्रीय दलों की बढ़ती भूमिका पर सहमति
     4. विचारधारा की जगह–प्रतिनिधित्व की राजनीति पर सहमति
     5. विचारधारा की जगह कार्य सिद्धि व स्वार्थ सिद्धि पर जोर

निष्कर्षः

इस प्रकार भारत की राजनीतिक दल प्रणाली की अपनी अनोखी विशेषताएँ हैं जो इसे पश्चिमी देशों की दलीय प्रणाली से भिन्नता प्रदान करती है। भारतीय संविधान के भाग 3 (मौलिक अधिकार) के अनुच्छेद 19(ब) में भारतीय नागरिकों को संघ बनाने की स्वतंत्रता

है। इसी अधिकार के कारण भारतीय दल व्यवस्था 'खुला राजनीतिक तंत्र' है जबकि चीन, उत्तरी कोरिया, क्यूबा आदि देशों का संविधान साम्यवादी दल के अतिरिक्त अन्य दलों के निर्माण की स्वतंत्रता नहीं देता। खुली राजनीतिक व्यवस्था के कारण भारत में राजनीतिक दलों का बाहुल्य है। 1952 के प्रथम आम चुनावों में जहां 77 राजनीतिक दलों ने भाग लिया वहीं 2014 के आम चुनावों में 6 राष्ट्रीय दलों, 47 राज्य स्तरीय दलों व 1634 गैर मान्यता प्राप्त रजिस्टर्ड दलों ने भाग लिया। इस प्रकार दलों की संख्या की दृष्टि से भारत में प्रारम्भ से ही बहुदलीय पद्धति रही है लेकिन लगभग 30 वर्षों तक केन्द्र व राज्यों की राजनीति में कांग्रेस पार्टी का ही प्रभुत्व बना रहा। इस दौर में संसद में प्रभावी विपक्ष का भी अभाव रहा। हालांकि भारत में दल बहुसंख्या में है पर इन दलों में स्पष्ट सैद्धांतिक व वैचारिक भिन्नता नहीं है, इनके लक्ष्यों, सिद्धान्तों व नीतियों में समानता दिखाई देती है। 1991 के बाद से तो वैचारिक भिन्नता की यह खाई बिल्कुल कम हो गयी है। इसका कारण भी है क्योंकि अधिकांश दलों का निर्माण व्यक्तिगत स्वार्थों के वशीभूत होकर किया गया है ना कि विचारधारा के आधार पर। इस समय देश में 600 से अधिक राजनीतिक दल है। स्वभाविक है 600 अलग–अलग विचारधाराएँ नहीं हो सकती।

बहुदलीय प्रणाली के कारण भारतीय दलीय व्यवस्था राजनीतिक अस्थिरता की शिकार भी रह चूकी है। 1989 से 91 के मध्य दो सरकारें रही वहीं 1996 से 1998 के मध्य तीन सरकारें। इन सरकारों की अस्थिरता का मूल कारण था क्षेत्रीय दलों का उद्भव। 1989 के बाद जिस गठबन्धनात्मक प्रणाली का आगाज हुआ उसमें इन क्षेत्रीय दलों का महत्व काफी बढ़ गया। हालांकि 1999 के बाद भारत में गठबंधन प्रणाली परिपक्व हो गयी है तथा उसमें स्थिर सरकारों का निर्माण हुआ है। पर क्षेत्रीय दलों का महत्व आज भी निर्विवाद रूप से कायम है।

संन्दर्भ सूची

1. डॉ. रजनी कोठारी, भारत में राजनीति, ऑरियेन्ट लागमैन, नई दिल्ली।
2. सुहास पलसीकर, के.सी. सुरी, योगेन्द्र यादव (2014), पार्टी कम्पीटीशन इन इण्डियन स्टेट्स : इलेक्ट्रोल पॉलिटिक्स इन पॉस्ट–कांग्रेस पोलिटी, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, यू.एस.ए.
3. डॉ. नरेश दाधीच – भारत में शासन एवं लोकतंत्र
4. एलेन बाल– आधुनिक राजनीति और शासन, मैकमिलन
5. डॉ. हरिशचन्द्र शर्मा – भारत में राज्यों की राजनीति

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 05 Issue 02
January 2018

6. डॉ. राजीव रंजन – लोकसभा चुनाव और राजनीति
7. डॉ. बसन्ती लाल बावेल – संसदीय प्रजातंत्र में विपक्ष की भूमिका
8. डॉ. उम्मेद सिंह इंदा – भारतीय दलीय व्यवस्था में विचारधारा
9. डॉ. जेठाराम प्रजापत – भारतीय दलीय व्यवस्था में विचारधारा
10. डॉ.बी.एल. फडिया – भारतीय शासन एवं राजनीति
11. डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी – भारतीय राजनीतिक दल, समस्याएँ एवं संभावनाएँ
12. मॉरिस जोन्स – दि गर्वनमेंट एण्ड पॉलिटिक्स इन इण्डिया
13. एस.एम. सईद – भारतीय राजनीतिक प्रणाली
14. डॉ. सुभाष कश्यप – सांविधानिक विकास एवं स्वतंत्रता संघर्ष तथा भारतीय राजनीति और संसद
15. निर्वाचन आयोग के प्रतिवेदन
16. इंडिया टुडे
17. प्रतियोगिता दर्पण
18. राजस्थान पत्रिका
19. दैनिक भास्कर, इत्यादि